नवम्बर २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

माता-पिता की अधीनता

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ३ अंक : ८
अखंड क्रमांक : ३२
नवम्बर २०१५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

संपादकीय

बालमित्रों,

माता-पिता के उपकारों को गिना नहीं जा सकता लेकिन हमें यह याद ही कहाँ रहता है? जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं वैसे-वैसे हम अपनी मर्ज़ी के अनुसार रहना पसंद करते हैं। उनका मार्गदर्शन हमें खिट-पिट लगता है। कभी हम यह नहीं सोचते कि ऐसा करना क्या हमारे हित में है?

सभी धर्मों ने, साथ ही साथ परम पूज्य दादाश्री ने माता-पिता के प्रति अधीनता को बहुत महत्त्व दिया है। हमें समझ में आए या न आए, लेकिन इसमें ही हमारा संपूर्ण हित समाया हुआ है।

तो आओ, इस अंक को पढ़कर हम भी अपने माता-पिता का उपकार मानकर उनके अधीन रहें और उन्हें खुश रखें।

- डिम्पल मेहता

माता-पिता की अधीनता

अक्रम एक्सप्रेस

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मुझे मम्मी-पापा मेरे भले के लिए ही कहते हैं लेकिन फिर भी मुझे अच्छा नहीं लगता, ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : यदि डॉक्टर कड़वी दवाई दें, तो वह लेना अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : अच्छा नहीं लगता फिर भी लेनी तो पड़ती ही है न।

दादाश्री : वैसे ही यह भी लेना पड़ेगा। अच्छा नहीं लगे फिर भी लेना पड़ेगा। शरीर स्वस्थ रखना हो तो लेना वर्ना नहीं। उनसे कह देना कि आज से आप हमें एक भी शब्द मत कहना।

प्रश्नकर्ता : क्या हर बार माता-पिता सही ही होते हैं?

दादाश्री : सही ही मान लेना। फादर-मदर जो कुछ भी कहें, उस पर बच्चों को कुछ सोचना नहीं चाहिए। क्योंकि वे अनुभवी हैं और तुम्हें अभी समझ नहीं है। यदि तुम माँ-बाप को तोलने जाओगे तो क्या होगा? माँ-बाप को जो अच्छा नहीं लगता वह नहीं करना चाहिए। वे हमेशा बच्चों का हित चाहते हैं। बच्चों को वही करना चाहिए जो माँ-बाप को अच्छा लगे और उनके अधीन रहना चाहिए। बच्चे माँ-बाप के अधीन रहकर काम करते रहें, अच्छा नहीं लगे फिर भी अधीन रहें तो उन्हें(माँ-बाप को) शांति मिलेगी, भीतर सुख होगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार तो ऐसा लगता है कि मेरी कोई गलती ही नहीं है, उनकी ही गलती है। ऐसा लगता है कि उन्हें तो खिट-पिट करने की आदत ही पड़ गई है।

दादाश्री : ऐसा लगे तो प्रतिक्रमण करना। जो व्यक्ति माँ-बाप के दोष देखता है, उसकी प्रगती रुक जाती है। वह धनवान बन सकता है, लेकिन उसकी उन्नति कभी भी नहीं हो सकती। माँ-बाप का दोष नहीं देखना चाहिए। हमारे द्वारा उन्हें दु:ख नहीं होना चाहिए। किसी ने चाय पिलाई हो तो हम उसका उपकार नहीं भूलते, फिर माँ-बाप के उपकार कैसे भूल सकते हैं? उन्होंने जन्म दिया, इतना बड़ा किया, खिलाया-पिलाया, तबियत का ध्यान रखा। यदि वे कुछ कहें तो हमें सुन लेना चाहिए, क्योंकि वे बड़े हैं न! यदि हम बच्चे यह समझ लें कि माँ-बाप ने हमें जन्म दिया है और यह जन्म मोक्ष के लायक है, तो इस उपकार को हमें भूलना नहीं चाहिए।

सुपर प्राइज़

"राघव, हम बाहर जा रहे हैं। दो घंटे में आ जाएँगे। अपना होमवर्क पूरा कर लेना।" फिर थोड़ा रुककर मम्मी ने पूछा, "तुम सुन रहे हो न मेरी बात?"

लेकिन राघव तो टी.वी. देखने में इतना मग्न था कि मम्मी का एक भी शब्द उसके कान में नहीं पड़ा। राघव का ध्यान खींचने के लिए मम्मी ने टी.वी. बंद कर दिया।

राघव एकदम भड़का, "क्या कर रही हो, मम्मी? इतना अच्छा प्रोग्राम चल रहा था।"

मम्मी सख्ती से बोलीं, "तुम्हारे लिए कौन सा प्रोग्राम अच्छा नहीं है? टी.वी. देखने में तुम इतने खो जाते हो कि तुम्हें आसपास का ध्यान ही नहीं रहता। अब मेरी बात ध्यान से सुनो। हम लोग बाहर जा रहे हैं। हम आएँ तब तक अपना होमवर्क पूरा कर लेना। अपने रूम को साफ कर लेना, और हाँ, घर से बाहर मत जाना।"

"ओ.के., ओ.के. अब मुझे रिमोट वापस दो" ऐसा कहकर राघव ने फिर से टी.वी. ऑन कर दिया।

राघव का ऐसा बर्ताव देखकर, मम्मी को थोड़ी निराशा हुई। लेकिन, उन्हें बाहर जाने की जल्दी थी, इसलिए वे बिना कुछ कहे पर्स कंधे पर डालकर बाहर निकल गईं।

जैसे ही मम्मी-पापा ने घर से बाहर पैर रखा कि राघव एक तरह की मुक्तता अनुभव करने लगा। उसने सोफे पर लेटकर टी.वी. की आवाज़ बढ़ा दी।

तभी फोन की घंटी बजी। लेटे-लेटे उसने टेबल तक हाथ बढ़ाकर फोन उठाया।

"हाय राघव, प्रणव बोल रहा हूँ।" प्रणव की आवाज़ में एक अलग ही तरह की झंकार थी, "मेरे डैडी मेरे लिए एक सुपर-कूल वीडियो गेम लाए हैं। तू मेरे घर आ न!"

"ओह रियली, मैं पाँच मिनट में ही आया।" ऐसा कहकर राघव फटाफट सोफे से उठा और घर को ताला लगाए बिना ही बाहर दौड़ा।

करीब दो घंटे निकल गए। वीडियो गेम खेलने में राघव को समय का ध्यान ही नहीं रहा। वापस लौटने पर मम्मी-पापा के गंभीर चेहरे देखकर वह एकदम घबरा गया। टी.वी. "ऑन" रखकर, घर लॉक किए बिना ही वह घर से बाहर निकल गया था।

अपनी तरफ से राघव कुछ भी बचाव करता उससे पहले ही पापा बोले, "आज से तेरा टी.वी. देखना बंद। मैंने सभी चैनल लॉक कर दिए हैं। जब तक तेरे बर्ताव में मुझे सुधार नहीं दिखेगा, तब तक तेरा टी.वी. देखना बंद।"

"लेकिन पापा...,"

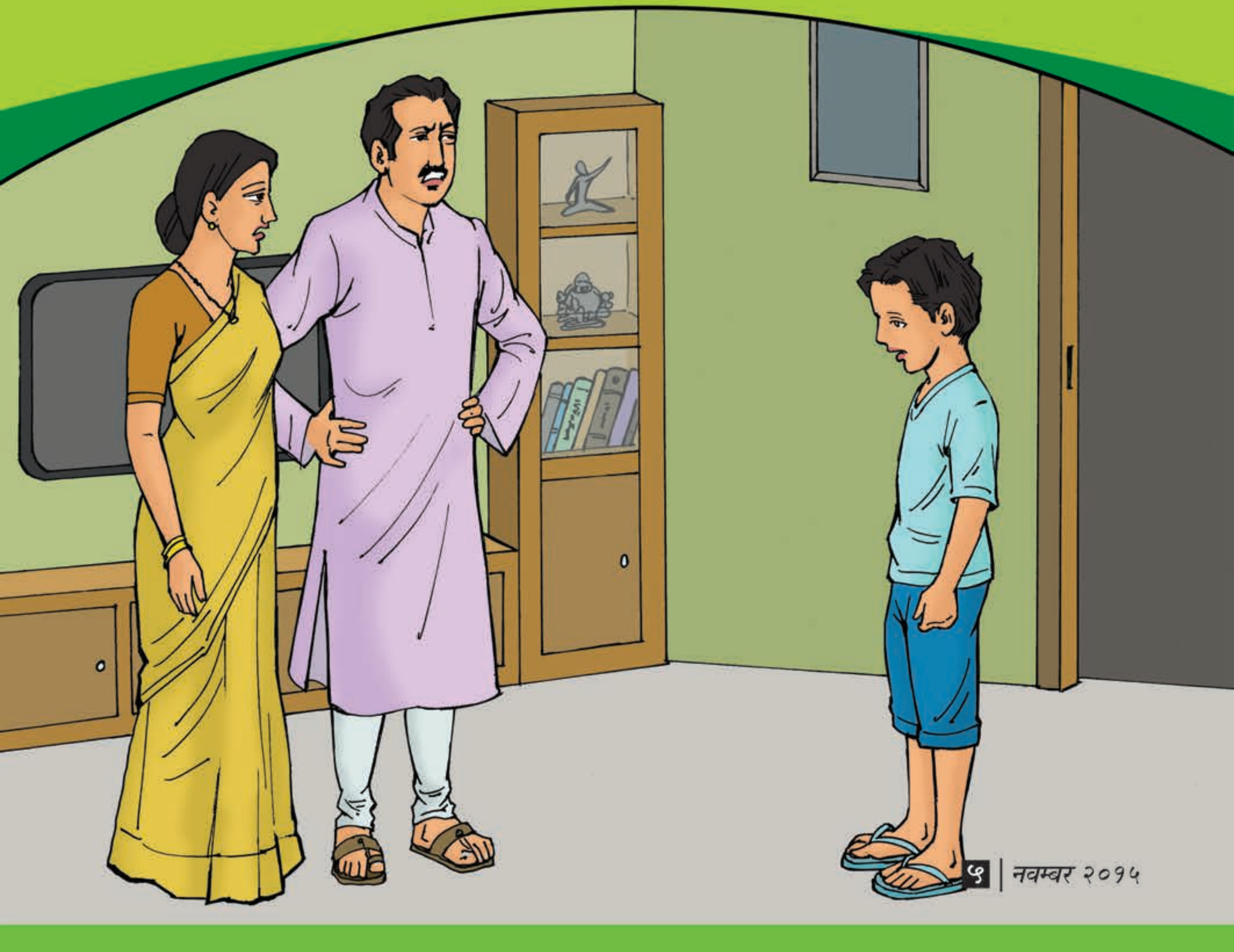

पापा राघव की कोई भी दलील सुनने के लिए तैयार नहीं थे, "लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। अब तेरा एक भी शब्द मुझे नहीं सुनना। अपना होमवर्क पूरा करके, रूम साफ करके सो जा।"

इस बात को करीब दो हफ्ते बीत गए। राघव को टी.वी. देखने की पर्मिशन नहीं थी लेकिन रेडियो सुनने की छूट थी। एक शाम को रेडियो सुनते-सुनते वह अपना होमवर्क कर रहा था, तभी मम्मी ने उसके रूम का दरवाज़ा खटखटाया, "राघव, हम बाहर जा रहे हैं। हम वापस आएँ तब तक अनिरुद्ध तुम्हारा और घर का ध्यान रखेगा।"

"व्हाट! मम्मी, क्या मैं बच्चा हूँ कि आप मेरे लिए बेबी-सिटर रखकर जा रहे हो?" राघव अकुला गया।

"बेटा, तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारी का ध्यान होता तो हमें ऐसा नहीं करना पड़ता।" ऐसा कहकर मम्मी रूम से बाहर निकल गईं।

अनिरुद्ध ने राघव से दो-चार बातें की और फिर लिविंग-रूम में जाकर अपनी बुक पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद वह राघव के रूम में गया तब राघव किताबें बंद करके तेज आवाज़ में रेडियो सुन रहा था।

"क्या कर रहा है, राघव? होमवर्क पूरा हो गया?" अनिरुद्ध ने दरवाज़े के पास खड़े होकर पूछा।

"ओह येस।" अनिरुद्ध को बिना देखे ही राघव ने जवाब दिया।

"राघव, तुम्हें एक बात कहूँ..."

अनिरुद्ध की बात बीच में ही काटकर राघव बोला, "एक मिनट, एक मिनट... सुना तुमने? रेडियो पर अनाउन्सर ने कहा है कि आज "सुपर-प्राइज़ डे" है। या हू!" राघव ने रेडियो का वॉल्यूम और बढ़ा दिया।

तभी फोन की घंटी बजी। अनिरुद्ध फोन उठाने बाहर गया। एक मिनट के बाद वह फिर राघव के रूम में आया।

"बोल, किसका फोन होगा?" सस्पेन्स पैदा करते हुए अनिरुद्ध बोला।

राघव ने अनिरुद्ध के सामने आकर पूछा, "क्या हुआ?"

"रेडियो स्टेशन से फोन था। तुझे सुपर प्राइज़ मिला है।" मुबारकबाद देने के लिए राघव की ओर हाथ बढ़ाते हुए अनिरुद्ध ने कहा।

"आर यू सीरियस?" राघव ने अनिरुद्ध से हाथ मिलाते हुए आश्चर्य से पूछा।

"हाँ! तो वे लोग पंद्रह साल के लिए तेरा सब खर्च उठाएँगे। इतना ही नहीं, तुझे रहने के लिए एक घर भी मिलनेवाला है!" प्राइज़ का वर्णन करते हुए अनिरुद्ध ने कहा।

"वाउ!" राघव पलंग पर कूदने लगा। फिर कुछ याद आने पर उसने पूछा, "लेकिन मुझे मेरा प्राइज़ मिलेगा कैसे?"

"प्राइज़ देने के लिए वे लोग पाँच-दस मिनट में ही घर आ रहे हैं।" अनिरुद्ध ने कहा।

"क्या बात कर रहे हो? मैं इतना लकी हूँ ऐसा मुझे पता ही नहीं था।" राघव खुशी से फूला नहीं समाया। प्राइज़ देनेवाले पर अपनी अच्छी छाप छोड़ने के लिए उसने फटाफट घर साफ कर दिया और खुद भी अच्छी तरह तैयार हो गया।

तभी डॉरबेल बजी। राघव के चेहरे पर हल्की मुस्कराहट थी। जैसे एक सिपाही होशियारी से खड़ा रहता है वैसे ही राघव दरवाज़े के पास सीधा खड़ा हो गया। दरवाज़ा खुला और राघव के मम्मी-पापा अंदर आए।

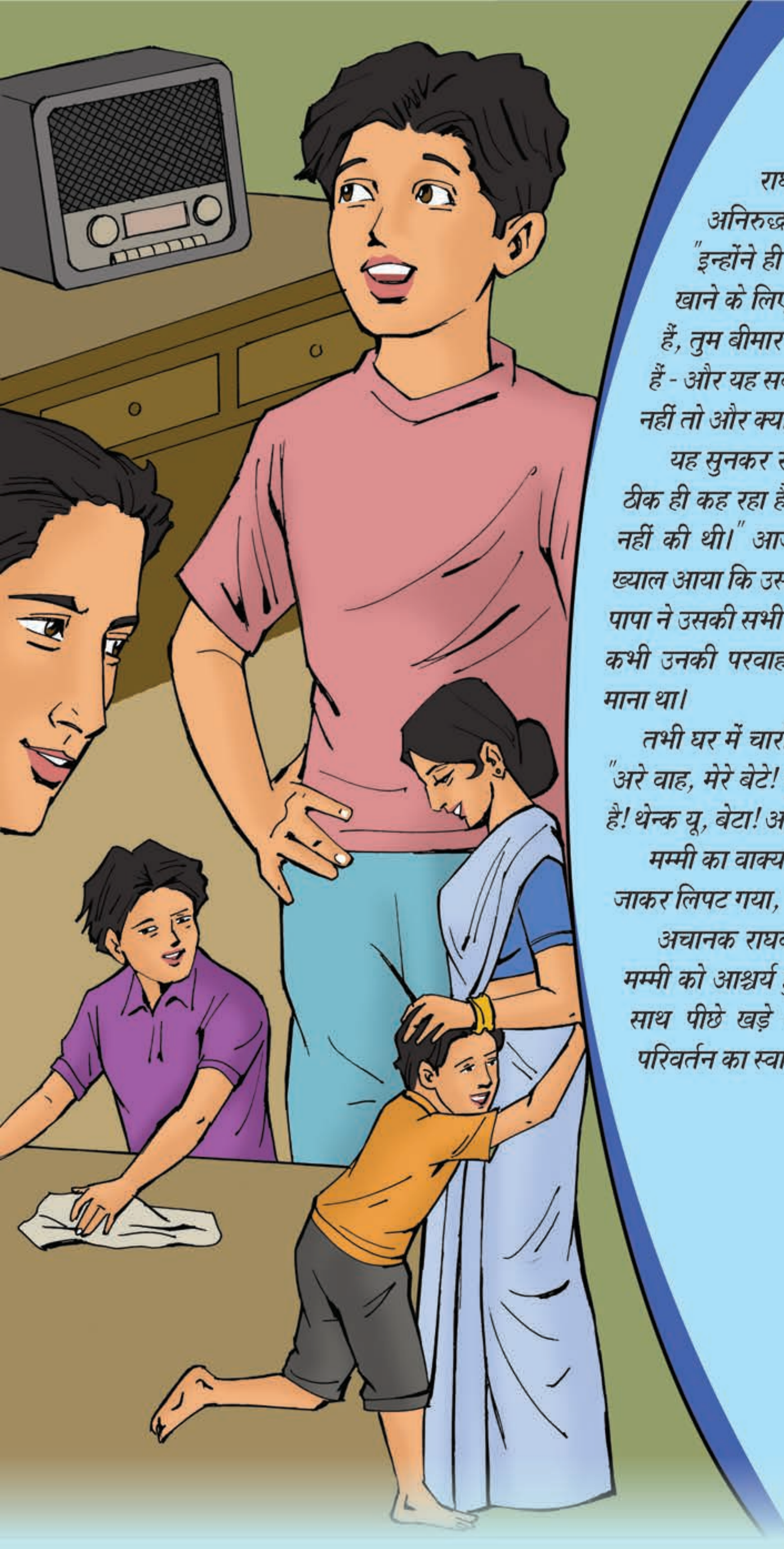

राघव ने ताककर अनिरुद्ध को देखा। अनिरुद्ध ने धीरे से उसके कान में कहा, "इन्होंने ही तो तुझे रहने के लिए घर दिया है, खाने के लिए दिया है, कपड़े दिए हैं, तुझे पढ़ाते हैं, तुम बीमार हो जाते हो तब तुम्हारी सेवा करते हैं - और यह सब फ्री ऑफ कोस्ट! इसे सुपर प्राइज़ नहीं तो और क्या कहेंगे?"

यह सुनकर राघव को होश आया कि "अनिरुद्ध ठीक ही कह रहा है। उसने मम्मी-पापा की कदर कभी नहीं की थी।" आज अनिरुद्ध की बात सुनकर उसे ख्याल आया कि उसके जन्म के बाद से ही उसके मम्मी-पापा ने उसकी सभी ज़रूरतें पूरी की थीं। लेकिन, उसने कभी उनकी परवाह नहीं की थी, उनका कहना नहीं माना था।

तभी घर में चारों तरफ नज़र घुमाकर मम्मी बोलीं, "अरे वाह, मेरे बेटे! तूने तो घर एकदम साफ कर दिया है! थेन्क यू, बेटा! आज तो मेरा "लकी डे" है!"

मम्मी का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही राघव उनसे जाकर लिपट गया, "मम्मी, मैं भी बहुत लकी हूँ!"

अचानक राघव में आए ऐसे बदलाव को देखकर मम्मी को आश्चर्य हुआ। एक हल्की सी मुस्कराहट के साथ पीछे खड़े अनिरुद्ध ने राघव में आए हुए परिवर्तन का स्वागत किया।

कड़वी दवाई

यह बात 1945 की है। जापान का एक छोटा सा गाँव था, जिसमें एक युवक अपने पिता के साथ खेतीबाड़ी का काम करता था।
एक दिन प्रातःकाल बैलगाड़ी में अपनी पूरी फसल भरकर, पिता-पुत्र पास ही के शहर में उसे बेचने के लिए निकले। सफर लंबा था।
बैल को जल्दी चलाने के लिए युवक ने उसे एक चाबुक मारा।
बेटा, इतनी जल्दी क्यों कर रहा है? इतनी ज़ोर से मारने से बैल को कितना दुःख होता होगा?
पिताजी, हर बात में मुझे टोकना बंद करो। हम जल्दी पहुँचेंगे तभी हमें हमारी फसल की अच्छी कीमत मिलेगी।
थोड़े समय के बाद,
बेटा, चाचा जी का घर पास में ही है। चल, थोड़ी देर के लिए उनसे मिल आएँ।
नहीं, मुझे उनसे नहीं मिलना। वे बहुत टोकते हैं।

बेटा, बड़ों का आदर करना चाहिए। हमारे जैसे संस्कारी लोगों को ऐसी भाषा शोभा नहीं देती।
आपकी शिक्षाओं को सुन सुनकर मैं बोर हो गया हूँ। जल्दी चलो और अब गाड़ी आप चलाओ। मैं थक गया हूँ।
एक चौराहे पर, पिता जी ने गाड़ी को दाई ओर मोड़ा।
ये आप क्या कर रहे हो? बाई तरफ मोड़ना था।
मुझे पता है बेटा। लेकिन इस तरफ रास्ता बहुत सुंदर है।
आपको समय की बिल्कुल भी कदर नहीं है?
बेटा, मुझे समय की कीमत मालूम है और इसीलिए मैं हर पल को जी लेना चाहता हूँ। यह तुम भी सीखो, ऐसा मैं चाहता हूँ।
युवक क्रोधित हो गया।
आपको पैसे कमाने के बजाय कुदरती सौंदर्य की मज़ा लेना ज्यादा अच्छा लगता है। अब से कभी भी मैं आपके साथ सफ़र नहीं करूँगा।
सूर्यास्त हो चुका था। पिता से अब ज्यादा चलना मुश्किल हो रहा था। एक सुंदर से बगीचे में पिता-पुत्र ने रात गुज़ारी।

सूर्योदय होते ही युवक ने पिता जी को थपथपाकर उठाया और पिता-पुत्र निकल पड़े।
रास्ते में एक किसान अपनी गाड़ी को गड्ढे में से बाहर निकाल रहा था।
बेटा, चल हम इस किसान की मदद करते हैं।
अब और ज्यादा समय बिगाड़ें? कोई ज़रूरत नहीं।
बेटा, जब तुम कभी गड्ढे में गिरोगे तब तुम्हें भी मदद की ज़रूरत पड़ेगी।
ऐसा कहकर पिता जी मदद करने के लिए उतर गए।
पिता जी वापस आए तभी आसमान में बिजली चमकने जैसा आभास हुआ। बिजली कड़कने की एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी।
लगता है शहर में बरसात पड़ रही है।
देखा! आपने जल्दी की होती तो अब तक हम माल बेचकर वापस लौट चुके होते।

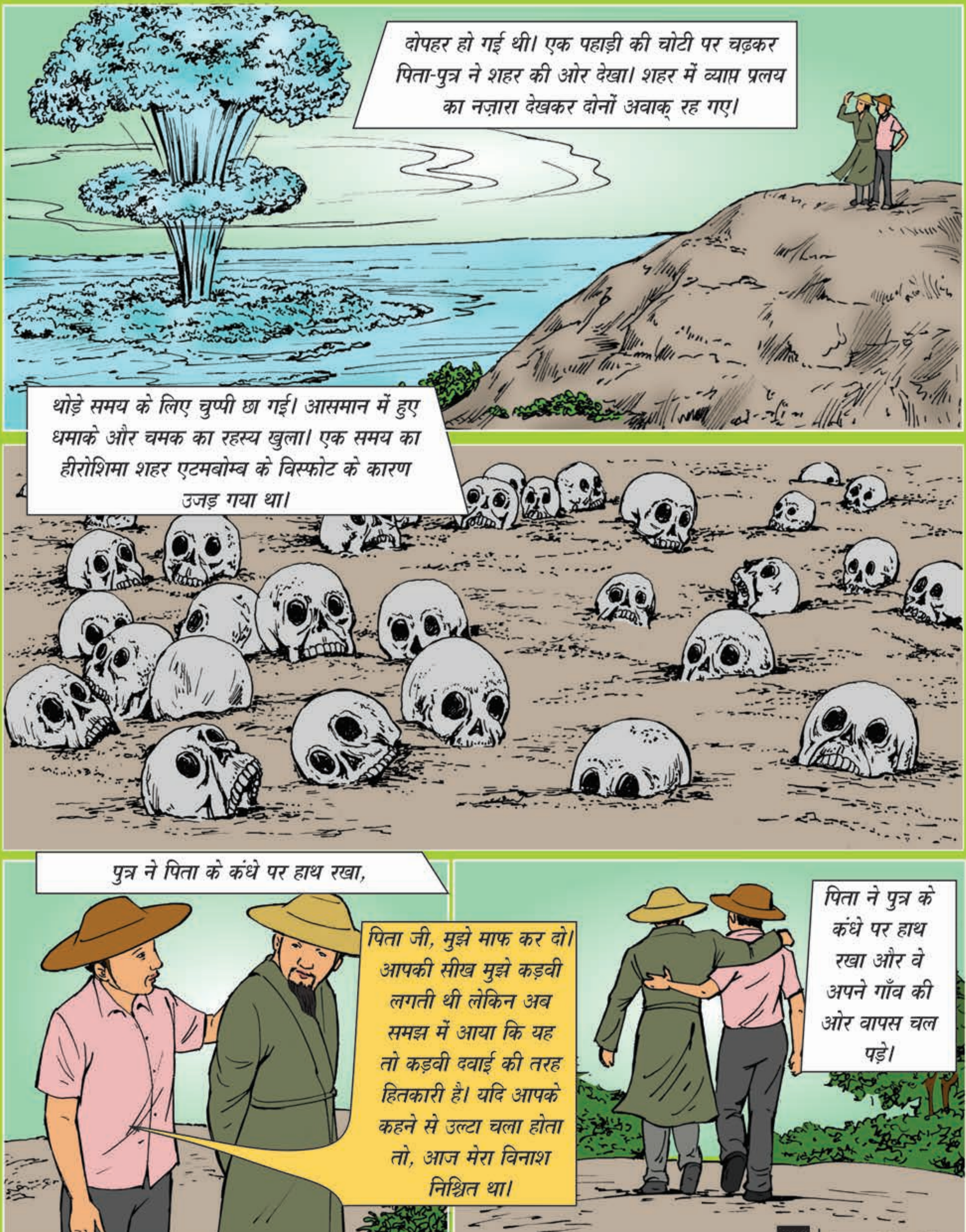
दोपहर हो गई थी। एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर पिता-पुत्र ने शहर की ओर देखा। शहर में व्याप्त प्रलय का नज़ारा देखकर दोनों अवाक् रह गए।
थोड़े समय के लिए चुप्पी छा गई। आसमान में हुए धमाके और चमक का रहस्य खुला। एक समय का हीरोशिमा शहर एटमबोम्ब के विस्फोट के कारण उजड़ गया था।
पुत्र ने पिता के कंधे पर हाथ रखा,
पिता जी, मुझे माफ कर दो। आपकी सीख मुझे कड़वी लगती थी लेकिन अब समझ में आया कि यह तो कड़वी दवाई की तरह हितकारी है। यदि आपके कहने से उल्टा चला होता तो, आज मेरा विनाश निश्चित था।
पिता ने पुत्र के कंधे पर हाथ रखा और वे अपने गाँव की ओर वापस चल पड़े।

चलो खेलें...

१ दिए गए चित्र में से नीचे दिखाई गई चीज़ें ढूँढो।

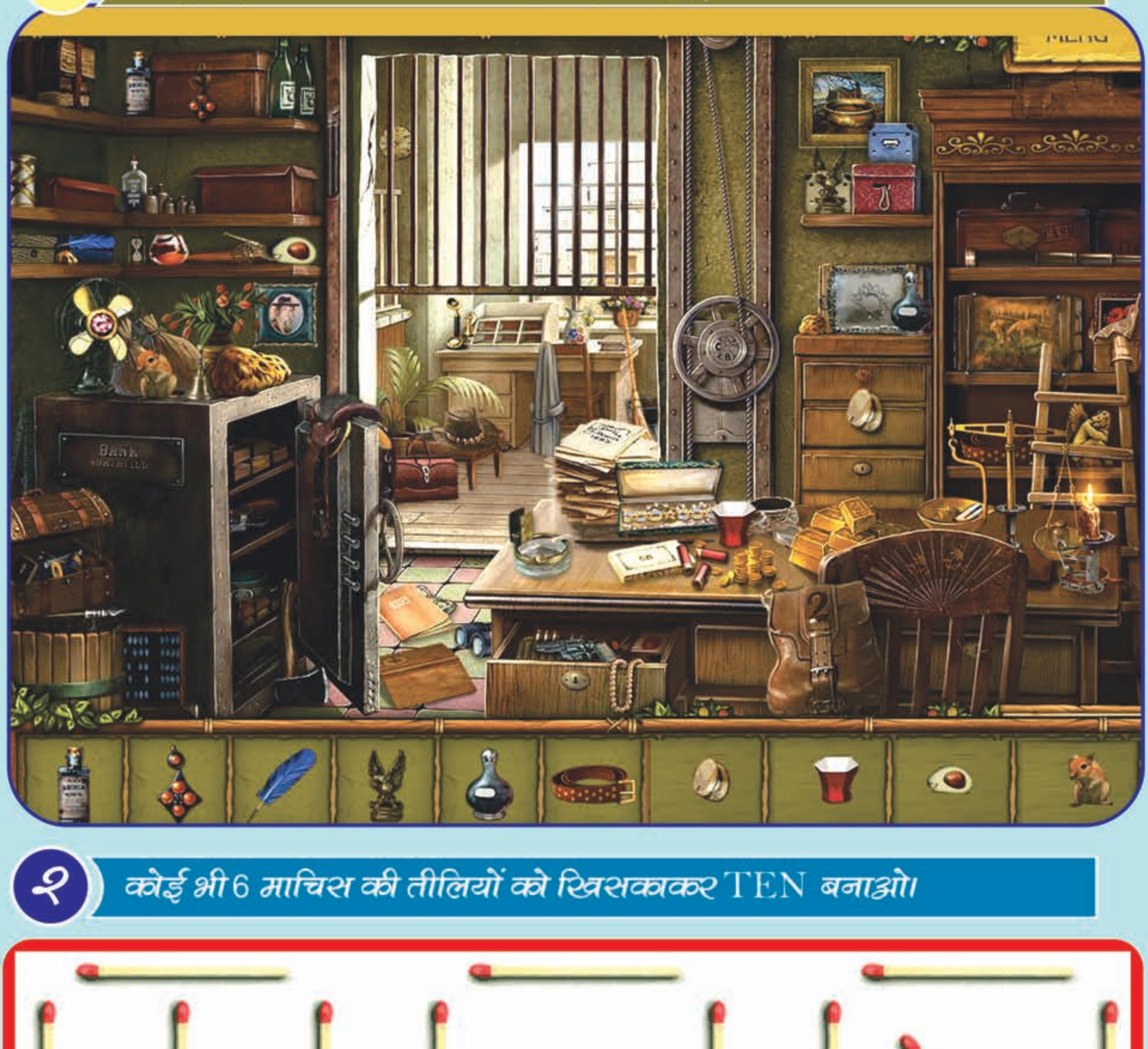

२ कोई भी 6 माचिस की तीलियों को खिसकाकर TEN बनाओ।

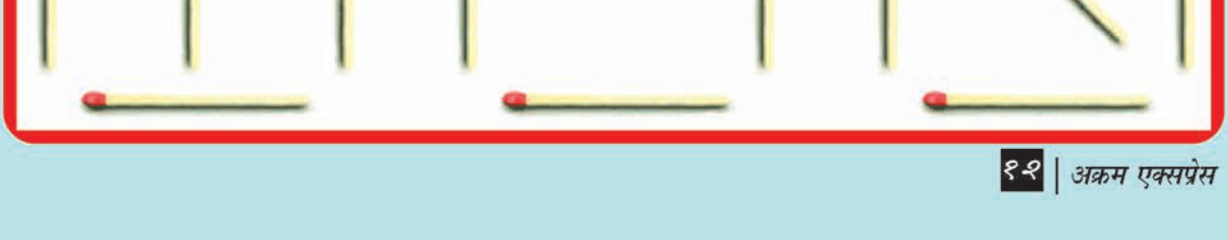

३

पास में दिए गए चित्र में बॉल और ड्रैगन के बीच ऐसी पाँच रेखाएँ खींचो जिससे दोनों चित्र अलग हो जाए।

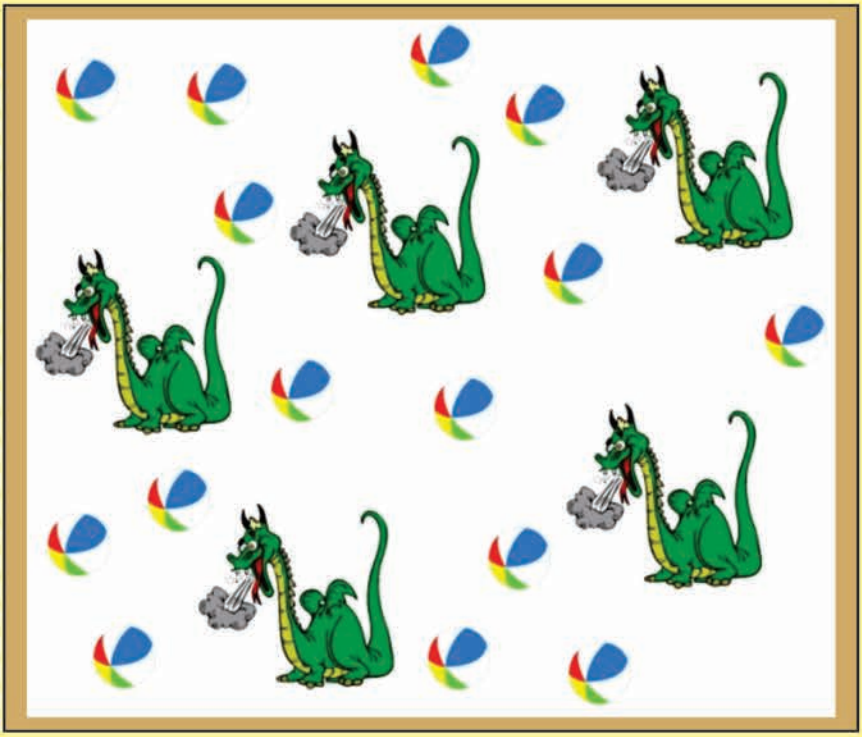

४ बीच में दिए गए "I" का उपयोग करके चारों बोक्स में से एक-एक स्पेलिंग बनाईए।

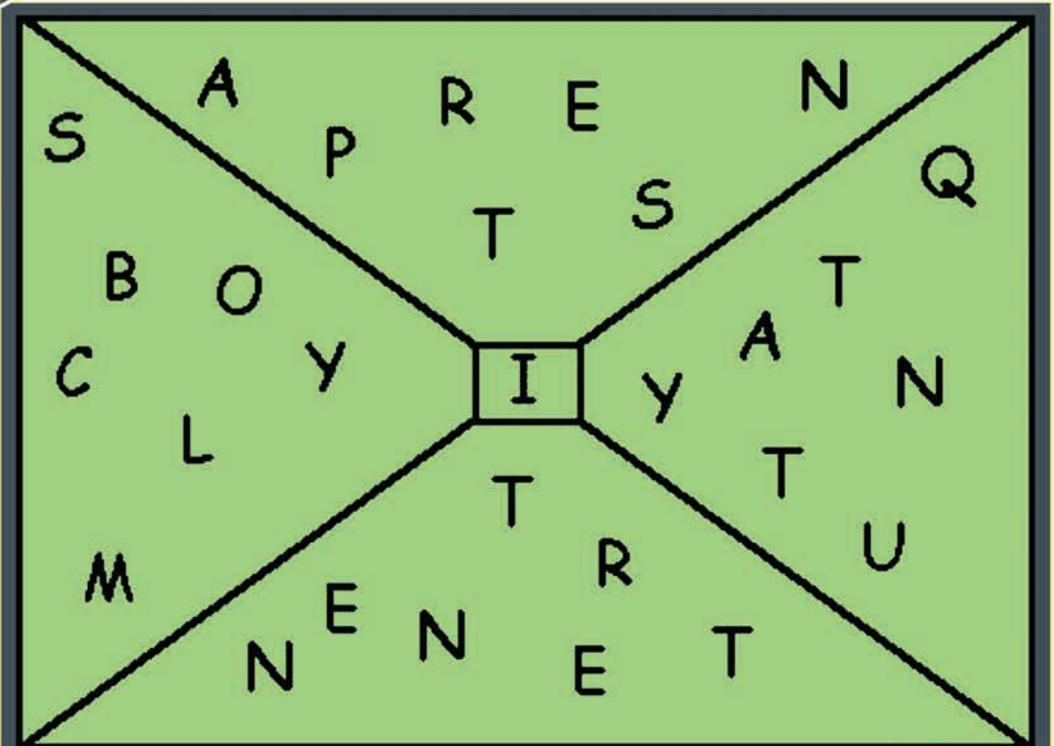

जीवंत उदाहरण (१)

16 नवम्बर 2013 के दिन सचिन तेंदुलकर ने क्रिकेट की दुनिया से निवृत्ति ली थी। अपनी फेअरवेल स्पीच में उन्होंने उन सभी को याद किया, जिनका उनके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान था। सचिन की भावनात्मक फेरवेल स्पीच को सुनकर स्टेडियम में ही नहीं बल्कि टी.वी. पर भी देखनेवाले करोड़ों फेन्स भावुक हो गए थे।

सब से पहले, सचिन ने पिता रमेश तेंदुलकर के बारे में कहा, "मेरे जीवन में मेरे पिता जी सब से महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। 1999 से मैंने उनकी बहुत कमी महसूस की है। शायद उनकी गाइडेन्स के बिना, मैं आपके सामने खड़ा नहीं हो पाता। ग्यारह साल की उम्र से उन्होंने मुझे स्वतंत्रता दे दी थी कि मैं अपने स्वप्न के लिए दौड़ूँ। लेकिन साथ ही साथ यह शिक्षा भी दी कि कभी शोर्ट कट का उपयोग न करूँ। रास्ता मुश्किल हो फिर भी हिम्मत नहीं हारूँ। मैंने हमेशा उनके मार्गदर्शन का अनुसरण किया। जब भी मैंने कभी किसी खास इनिंग के बाद बैट हवा में उठाया, वह मेरे पिता के लिए होता।"

उसके बाद सचिन ने अपनी माता को याद किया। उन्होंने कहा "मेरे जैसे शरारती बच्चे को संभालना आसान काम नहीं था। लेकिन मेरी माता में बहुत धीरज था। एक माता के लिए सब से महत्व की बात ये हैं कि उनका बच्चा स्वस्थ एवं सुरक्षित रहे। मेरी माता को हमेशा मेरी सेहत की फिकर रहती। पिछले चौबीस साल से मैं इंडिया के लिए क्रिकेट खेल रहा हूँ। इस समय के दौरान उन्होंने मेरी देखभाल की है। लेकिन उससे भी पहले, जब से मैंने क्रिकेट खेलना शुरू किया है, तब से उन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की है। उनके आशीर्वाद और प्रार्थना से, आज मुझे इस स्थान पर पहुँचने की शक्ति मिली है।"

उसके बाद जिन-जिन व्यक्तियों ने उनकी ज़िंदगी में महत्वपूर्ण योगदान दिया, उन सभी का उन्होंने दिल से आभार व्यक्त किया।

मित्रों, सचिन तेंदुलकर जैसे महान और सफल क्रिकेटर ने अपनी सफलता का सब से ज्यादा श्रेय अपने पेरन्ट्स को ही दिया। उन्होंने अपने पिता के दिए गए अमूल्य संस्कारों को हमेशा अपने हृदय में संभालकर रखा। माता के आशीर्वाद और प्रार्थना के द्वारा वे सफलता की सीढ़ी चढ़े।

मित्रों, हमारे जीवन में भी हमारे माता-पिता का अमूल्य योगदान है लेकिन मुख्य बात यह है कि हम इस योगदान को पहचानें और उनके प्रति कृतज्ञ रहें। तो चलिए, आज हम भी निश्चय करेंगे कि हम अपने पेरन्ट्स के कहे अनुसार चलेंगे और उन्हें खुश रखेंगे।

(२)

रिचर्ड ओलरेड, जो अमरिका के एयरफॉर्स ऑफीसर थे, उन्होंने अपने एक इन्टरव्यू में माता-पिता की अधीनता में रहने का एक सुंदर प्रसंग बताया।

रिचर्ड ओलरेड के पिता जी, एल्वुड ओलरेड बचपन में घर के काम में अपनी मम्मी की मदद करते थे। एक बार मम्मी के कहने पर वे अनाज के भंडार से अनाज लेने गए। एल्वुड बाहर निकल ही रहे थे, उनकी मम्मी की आवाज़ सुनाई दी, "एल्वुड, तुम जिस रास्ते से अंदर गए हो उस रास्ते से बाहर मत आना। दूसरे दरवाज़े से बाहर निकलना।"

"लेकिन मम्मी...," एल्वुड ने थोड़ी आना-कानी की, "दूसरे रास्ते में अँधेरा है और वहाँ मकड़ी के जाले लगे हुए हैं।"

"बेटा, मेरी बात मान।" मम्मी ने कहा।

मम्मी के कहे अनुसार एल्वुड अँधेरे रास्ते से चलकर दूसरे दरवाज़े से बाहर निकले। तभी उनकी मम्मी आकर उनसे लिपट गईं, "थेन्क यू बेटा। तुमने मेरा कहा माना।"

फिर एल्वुड का हाथ अपने हाथ में लेकर मम्मी बोलीं, "मुझे तुम्हें कुछ बताना है।" ऐसा कहकर मम्मी एल्वुड को उस जगह पर ले गईं, जहाँ से एल्वुड बाहर निकलनेवाले थे। उस जगह पर एक जहरीले साँप को देखकर एल्वुड बहुत ही भयभीत हो गए। उस दिन मम्मी की बात मानकर शायद एल्वुड ने अपनी जान बचाई थी।

रिचर्ड ओलरेड इस घटना का वर्णन करते हैं कि, "मैं छोटा था, तब यह बात मेरे पिता जी ने मुझे बतायी थी। मम्मी-पापा के कहे अनुसार काम करने का महत्व मुझे बचपन से ही समझ में आ गया था। मैं हमेशा अपने मम्मी-पापा के कहे अनुसार ही करता हूँ, क्योंकि मैं जानता था कि वे मुझ से ज्यादा समझ रखते हैं, मुझ से प्रेम करते हैं और मेरा भला ही चाहते हैं।"

ऐतिहासिक गौरवगाथा

बहुत पुराने समय की बात है। एक राजा के अनेक बेटे थे लेकिन बेटी एक भी नहीं थी। उन्होंने कई मन्नतें माँगी। अंत में उनके फलस्वरूप उनके घर एक बेटी का जन्म हुआ। उसका नाम लक्ष्मणा रखा। बहुत ही लाड़-प्यार से उसका बचपन बीता और वह युवा हुई।

लक्ष्मणा के युवा होते ही राजा ने उसके लिए स्वयंवर रचा। स्वयंवर मंडप में लक्ष्मणा ने वरमाला लेकर घूमते हुए एक मनपसंद वर को वरमाला पहनाई। राजा ने बहुत ही धूमधाम से विवाह उत्सव किया। शादी की विधि हुई। वर-वधू शादी के मंडप में फेरे लगा ही रहे थे कि अचानक वहीं वर की मृत्यु हो गई।

लक्ष्मणा तो अवाक रह गई। उसे बहुत सदमा लगा। "ऐसा संसार!" ऐसा सोचते-सोचते उसका मन संसार से उठ गया। वैराग्य आने पर उसने दीक्षा ले ली।

समय बीतने लगा। लक्ष्मणा साध्वी जी बहुत ही अच्छी तरह से दीक्षा का पालन कर रही थीं।

एक दिन वह एक कोने में खड़ी थीं। तभी उन्होंने सामने के पेड़ पर एक पक्षी के जोड़े को क्रीडा करते हुए देखा। उस दृश्य को देखकर साध्वी लक्ष्मणा के भीतर वासना की वृत्ति सुलगने लगी। उन्हें शादीशुदा जीवन जीने का विचार आया।

लेकिन तुरंत दूसरे ही क्षण वे सावधान हो गई। उस गलत विचार के लिए वे पश्चाताप करने लगीं, अरेरे! मैंने बहुत ही गलत विचार किया। नहीं सोचने जैसा सोच लिया। मुझ से यह एक महापाप हो गया। मुझे उसकी आलोचना करनी चाहिए। लेकिन मुझे ऐसा कामी विचार आया उसे तो मैं कह भी नहीं सकती और नहीं कहूँगी तो वह दोष रह जाएगा। और यदि दोष धोए बिना रह जाएगा तो मैं शुद्ध नहीं हो पाऊँगी।

बहुत सोचने के बाद वे गुरु के पास आलोचना करने गईं। चलते-चलते उनके पैर में काँटा चुभ गया। इस अपशकुन से गुरु से सच्ची बात कहने के लिए तैयार हुआ मन पलट गया। आखिर में उन्होंने दूसरे का नाम लेकर पूछा, "गुरुदेव! जो ऐसा दुर्ध्यान करता है उसे क्या प्रायश्चित करना पड़ता है?"

गुरु जी ने स्पष्टता करने के लिए कहा लेकिन वे नहीं कर पाईं। गुरु से उन्होंने प्रायश्चित सीख लिया और उसके अनुसार उन्होंने पचास साल तक तप किया। लेकिन सत्य बात छिपाने की वजह से उनका आत्मा विशुद्ध नहीं हुआ और उनका मोक्ष अटक गया। अब कई अवतार भटकने के बाद वे मोक्ष में जा पाएँगी।

देखा मित्रों, गुरु से सत्य बात छिपाने का परिणाम।

और अंत में...

एक युवक अपने वृद्ध माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ने के लिए गया। वह युवक बहुत ही पढ़ा-लिखा, सुखी और समृद्ध था। उसके पिता ने अपनी पूरी संपत्ति इस बेटे के नाम कर दी थी। बचपन में उस बेटे को बहुत ही प्यार से रखा था, ताकि वृद्धावस्था में बेटा भी उन्हें प्यार से रखेगा ऐसी अपेक्षा थी।

माता-पिता ने इकलौते बेटे की शादी भी बहुत ही धूम-धाम से की थी। लेकिन उसी बेटे और उसकी पत्नी को अब घर में माता-पिता की उपस्थिति अखरती थी। इसलिए उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आने का तय किया। माता-पिता ने भी बेटे की बात कुछ भी आना-कानी किए बिना स्वीकार कर ली।

आज बेटा अपनी पत्नी के साथ माता-पिता को छोड़ने के लिए वृद्धाश्रम में आया था। वृद्धाश्रम में आकर बेटा और उसकी पत्नी मेनेजर की ऑफिस में गए, और माता-पिता ऑफिस के बाहर बैठे थे। आश्रम में रहने की सभी कार्यवाही पूरी करके बेटा-बहू खुशी से मेनेजर के साथ उसकी ऑफिस से बाहर आए। युवक के माता-पिता सिर झुकाए बैठे थे। मेनेजर बाहर आकर उन्हें देखते ही बोले, "अरे सेठ साहब! आप यहाँ?

बेटे ने यह सुना, उसने मेनेजर से पूछा, "आप पिता जी को कब से पहचानते हो?"

मेनेजर ने कहा, "पिछले बीस साल से। जब वे एक अनाथ बच्चे को गोद लेने आए थे।"

"क्या?" बेटे के मुँह से शब्द निकल गया।

मेनेजर ने कहा, "मानवता का मसीहा है यह इंसान। हमारे अनाथाश्रम का एक बच्चा कई बिमारियों से घेरा हुआ था। इन भले इंसान ने अन्य अच्छे बच्चे को गोद लेने के बदले, उस रोगिष्ठ बच्चे को गोद लिया। उस बच्चे के इलाज में उन्होंने लाखों रुपए खर्च कर दिए और बच्चे को रोग मुक्त किया। इन्होंने उस बच्चे को कभी भी पता नहीं लगने दिया कि उसे अनाथाश्रम में से गोद लिया गया है।"

बात सुनकर युवक का सिर शर्म से झुक गया।

दत्तक लिए हुए बच्चे का भी मा-बाप अपने सगे बच्चे की तरह ही पालन करते हैं, जीवन में ऐसे मा-बाप का मूल्य क्या करें?

जवाब

१

२

३

४
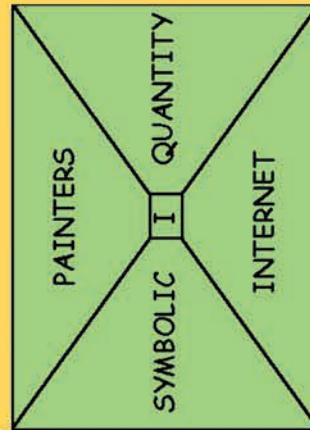

पूज्यश्री के साथ बच्चे

Akram Express

November 2015
Year : 3, Issue : 8
Conti. Issue No.: 32

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

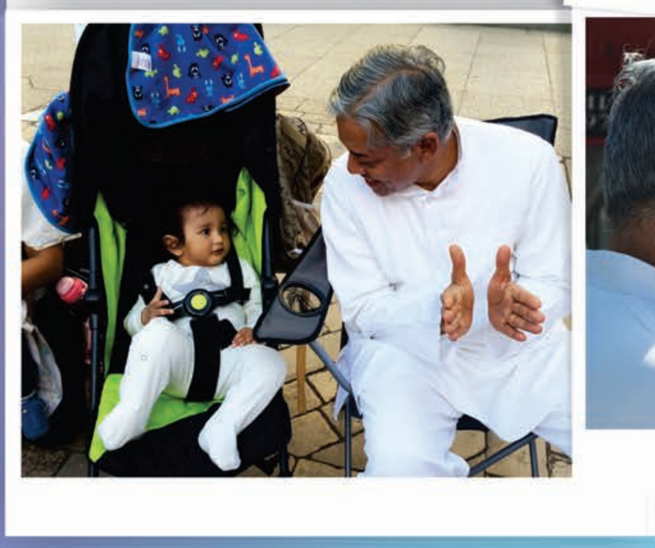

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published